

=====

AVYAKT MURLI

24 / 02 / 85

=====

24-02-85 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

संगमयुग - सर्व श्रेष्ठ प्राप्तियों का युग

सदा महादानी,वरदानी बापदादा अपने-अपने बच्चों प्रति बोले

आज बापदादा चारों ओर के प्राप्ति स्वरूप विशेष आत्माओं को देख रहे थे। एक तरफ अनेक आत्मायें अल्पकाल के प्राप्ति वाली हैं जिसमें प्राप्ति के साथ-साथ अप्राप्ति भी है। आज प्राप्ति है, कल अप्राप्ति है। तो एक तरफ अनेक प्राप्ति सो अप्राप्ति स्वरूप। दूसरे तरफ बहुत थोड़े सदाकाल की प्राप्ति स्वरूप विशेष आत्मायें। दोनों के महान अन्तर को देख रहे थे। बापदादा प्राप्ति स्वरूप बच्चों को देख हर्षित हो रहे थे। प्राप्ति स्वरूप बच्चे कितने पद्मापद्म भाग्यवान हो। इतनी प्राप्ति कर ली जो आप विशेष आत्माओं के हर कदम में पद्म है। लौकिक में प्राप्ति स्वरूप जीवन में

विशेष चार बातों की प्राप्ति आवश्यक है। (1) सुखमय सम्बन्ध। (2) स्वभाव और संस्कार सदा शीतल और स्नेही हो। (3) सच्ची कमाई की श्रेष्ठ सम्पत्ति हो। (4) श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ सम्पर्क हो। अगर यह चारों ही बातें प्राप्त हैं तो लौकिक जीवन में भी सफलता और खुशी है। लेकिन लौकिक जीवन की प्राप्तिyaँ अल्पकाल की प्राप्तिyaँ हैं। आज सुखमय सम्बन्ध है कल वही सम्बन्ध दुःखमय बन जाता है। आज सफलता है कल नहीं है। इसके अन्तर में आप प्राप्ति स्वरूप श्रेष्ठ आत्माओं को इस अलौकिक श्रेष्ठ जीवन में चारों ही बातें सदा प्राप्त हैं। क्योंकि डायरेक्ट सुखदाता सर्व प्राप्तिyaँ के दाता के साथ अविनाशी सम्बन्ध है। जो अविनाशी सम्बन्ध कभी भी दुख वा धोखा देने वाला नहीं है। विनाशी सम्बन्धों में वर्तमान समय दुख है वा धोखा है। अविनाशी सम्बन्ध में सच्चा स्नेह है। सुख है। तो सदा स्नेह और सुख के सर्व सम्बन्ध बाप से प्राप्त हैं। एक भी सम्बन्ध की कमी नहीं हैं। जो सम्बन्ध चाहो उसी सम्बन्ध से प्राप्ति का अनुभव कर लो। जिस आत्मा को जो सम्बन्ध प्यारा है उसी सम्बन्ध से भगवान प्रीत की रीति निभा रहे हैं। भगवान को सर्व सम्बन्धी बना लिया। ऐसा श्रेष्ठ सम्बन्ध सारे कल्प में प्राप्त नहीं हो सकता। तो सम्बन्ध भी प्राप्त है। साथसाथ इस अलौकिक दिव्य-जन्म में सदा श्रेष्ठ स्वभाव, ईश्वरीय संस्कार होने कारण स्वभाव संस्कार कभी दुःख नहीं देते। जो बापदादा के संस्कार वह बच्चों के संस्कार। जो बापदादा का स्वभाव वह बच्चों का स्वभाव। स्व-भाव अर्थात् सदा हर एक के प्रति स्व अर्थात्

आत्म-भाव। 'स्व' श्रेष्ठ को भी कहा जाता है। स्व का भाव वा श्रेष्ठ भाव यही स्वभाव हो। सदा महादानी रहमदिल विश्व-कल्याणकारी। यह बाप के संस्कार सो आपके संस्कार हों। इसलिए स्वभाव और संस्कार सदा खुशी की प्राप्ति कराते हैं। ऐसे ही सच्ची कमाई की सुखमय सम्पत्ति है। तो अविनाशी खजाने कितने मिले हैं? हर एक खजाने की खानियों के मालिक हो। सिर्फ खजाना नहीं, अखुट अनगिनत खजाने मिले हैं। जो खर्चो, खाओ और बढ़ाते रहो। जितना खर्च करो उतना बढ़ता है। अनुभवी हो ना। स्थूल सम्पत्ति किसलिए कमाते हैं? दाल रोटी सुख से खावें। परिवार सुखी हो। दुनिया में नाम अच्छा हो! आप अपने को देखो कितने सुख और खुशी की, दाल रोटी मिल रही है। जो गायन भी है - 'दाल रोटी खाओ भगवान के गीत गाओ'। ऐसे गायन की हुई दाल रोटी खा रहे हो। और ब्राह्मण बच्चों को बापदादा की गैरन्टी है - ब्राह्मण बच्चा दाल रोटी से वंचित हो नहीं सकता। आसक्ति वाला खाना नहीं मिलेगा लेकिन दाल रोटी जरूर मिलेगी। दाल रोटी भी है, परिवार भी ठीक है और नाम कितना बाला है! इतना आपका नाम बाला है जो आज लास्ट जन्म तक आप पहुँच गये हो। लेकिन आपके जड़ चित्रों के नाम से अनेक आत्मायें अपना काम सिद्ध कर रही हैं। नाम आप देवी-देवताओं का लेते हैं। काम अपना सिद्ध करते हैं। इतना नाम बाला है। एक जन्म नाम बाला नहीं होता, सारा कल्प आपका नाम बाला है। तो सुखमय, सच्चे सम्पत्तिवान हो। बाप के सम्पर्क में आने से आपका भी श्रेष्ठ सम्पर्क बन गया है। आपका ऐसा श्रेष्ठ

सम्पर्क है जो आपके जड़ चित्रों की सेकण्ड के सम्पर्क की भी प्यासी हैं। सिर्फ दर्शन के सम्पर्क के भी कितने प्यासे हैं! सारी-सारी रातें जागरण करते रहते हैं। सिर्फ सेकण्ड के दर्शन के सम्पर्क के लिए पुकारते रहते हैं। चिल्लाते रहते वा सिर्फ सामने जावें उसके लिए कितना सहन करते हैं! हैं चित्र और ऐसे चित्र घर में भी होते हैं फिर भी एक सेकण्ड के सम्मुख सम्पर्क के लिए कितने प्यासे हैं! एक बेहद के बाप के बनने के कारण सारे विश्व की आत्माओं से सम्पर्क हो गया। बेहद के परिवार के हो गये। विश्व की सर्व आत्माओं से सम्पर्क बन गया। तो चारों ही बातें अविनाशी प्राप्त हैं। इसलिए सदा सुखी जीवन है। प्राप्ति स्वरूप जीवन है। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के जीवन में। यही आपके गीत हैं। ऐसे प्राप्ति स्वरूप हो ना वा बनना है? तो सुनाया ना आज प्राप्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे थे। जिस श्रेष्ठ जीवन के लिए दुनिया वाले कितनी मेहनत करते हैं। और आपने क्या किया? मेहनत की वा मुहब्बत की? प्यार-प्यार में ही बाप को अपना बना लिया। तो दुनिया वाले मेहनत करते हैं और आपने मुहब्बत से पा लिया। बाबा कहा और खजानों की चाबी मिली। दुनिया वालों से पूछो तो क्या कहेंगे? कमाना बड़ा मुश्किल है। इस दुनिया में चलना बड़ा मुश्किल है और आप क्या कहते हो? कदम में पद्म कमाना है। और चलना कितना सहज है! उड़ती कला है तो चलने से भी बच गये। आप कहेंगे - चलना क्या, उड़ना है। कितना अन्तर हो गया! बापदादा आज विश्व के सभी बच्चों को देख रहे थे। सभी अपनी-अपनी प्राप्ति की लगन

में लगे हुए हैं लेकिन रिजल्ट क्या है! सब खोज करने में लगे हुए हैं। साइन्स वाले देखो अपनी खोज में इतने व्यस्त हैं जो और कुछ नहीं सूझता। महान आत्मार्यें देखो प्रभु को पाने की खोज में लगी हुई हैं। वा छोटी सी भ्रान्ति के कारण प्राप्ति से वंचित हैं। आत्मा ही परमात्मा है वा सर्वव्यापी परमात्मा है इस भ्रान्ति के कारण खोज में ही रह गये। प्राप्ति से वंचित रह गये हैं। साइन्स वाले भी - अभी और आगे है और आगे है, ऐसा करते-करते चन्द्रमा में, सितारों में दुनिया बनायेंगे, खोजते-खोजते खो गये हैं। शास्त्रवादी देखो शास्त्रार्थ के चक्कर में विस्तार में खो गये हैं। शास्त्रार्थ का लक्ष्य रख अर्थ से वंचित हो गये हैं। राजनेताएँ देखो कुर्सा की भाग दौड़ में खोये हुए हैं। और दुनिया के अन्जान आत्मार्यें देखो विनाशी प्राप्ति के तिनके के सहारे को असली सहारा समझ बैठ गई हैं। और आपने क्या किया? वह खोये हुए हैं और आपने पा लिया। भ्रान्ति को मिटा लिया। तो प्राप्ति स्वरूप हो गये। इसलिए सदा प्राप्ति स्वरूप श्रेष्ठ आत्मार्यें हो।

बापदादा विशेष डबल विदेशी बच्चों को मुबारक देते हैं कि विश्व में अनेक आत्माओं के बीच आप श्रेष्ठ आत्माओं की पहचान का नेत्र शक्तिशाली रहा। जो पहचाना और पाया। तो बापदादा डबल विदेशी बच्चों की पहचान के नेत्र को देख बच्चों के गुण गा रहे हैं कि वाह बच्चे, वाह! जो दूरदेशी होते, भिन्न धर्म के होते, भिन्न रीति रसम के होते अपने असली बाप को

दूर होते भी समीप से पहचान लिया। समीप के सम्बन्ध में आ गये। ब्राह्मण जीवन की रीति रसम को अपनी आदि रीति रसम समझ, सहज अपने जीवन में अपना लिया है। इसको कहा जाता है - विशेष लवली और लकी बच्चे। जैसे बच्चों को विशेष खुशी है, बापदादा को भी विशेष खुशी है। ब्राह्मण परिवार की आत्मायें विश्व के कोनेकोने में पहुँच गई थी लेकिन कोने-कोने से बिछुड़ी हुई श्रेष्ठ आत्मायें फिर से अपने परिवार में पहुँच गई हैं। बाप ने ढूँढा, आपने पहचाना। इसलिए प्राप्ति के अधिकारी बन गये।
अच्छा -

ऐसे अविनाशी प्राप्ति स्वरूप बच्चों को, सदा सर्व सम्बन्धों के अनुभव करने वाले बच्चों को, सदा अविनाशी सम्पत्तिवान बच्चों को, सदा बाप समान श्रेष्ठ संस्कार और सदा स्व के भाव में रहने वाले सर्व प्राप्तियों के भण्डार सर्व प्राप्तियों के महान दानी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।”

आज बापदादा ने पूरी रात सभी बच्चों से मिलन मनाया और सुबह 7 बजे यादप्यार दे विदाई ली, सुबह का क्लास बापदादा ने ही कराया! रोज बापदादा द्वारा महावाक्य सुनते-सुनते महान आत्मायें बन गयी। तो आज के दिन का यही सार, सारा दिन मन के साज़ के साथ सुनना कि महावाक्य सुनने से महान बने हैं। महान ते महान कर्तव्य करने के लिए

सदा निमित्त हैं। हर आत्मा के प्रति मंसा से, वाचा से, सम्पर्क से महादानी आत्मा हैं और सदा महान युग के आह्वान करने वाले अधिकारी आत्मा हैं। यही याद रखना। सदा ऐसे महान स्मृति में रहने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सिकीलधे बच्चों को बापदादा का यादप्यार और गुडमोर्निंग। होवनहार और वर्तमान बादशाहों को बाप की नमस्ते। अच्छा!

QUIZ QUESTIONS

प्रश्न 1 :- विनाशी और अविनाशी संबंधों के बारे में बाबा ने क्या बताया?

प्रश्न 2 :- हम बच्चों के पूजनीय रूप में पूजन होने के विषय में बाबा क्या कहते हैं?

प्रश्न 3 :- दुनिया की आत्माएं परमात्मा को प्राप्त करने से वंचित क्यों हैं?

प्रश्न 4 :- डबल विदेशी बच्चों से बाप दादा क्या कह रहे हैं?

प्रश्न 5 :- बाबा हम ब्राह्मण बच्चों को कौन सी आत्मा कह रहे हैं?

FILL IN THE BLANKS:-

(खुशी, विश्व, विशेष, संपर्क, अप्राप्ति, रिजल्ट, रोटी, अनेक, कदम, अल्पकाल, अपने, खोज, बाप, प्राप्ति, लगन)

- 1 आप _____ को देखो कितने सुख और _____ की, दाल _____ मिल रही है।
- 2 एक बेहद के _____ के बनने के कारण सारे _____ की आत्माओं से _____ हो गया।
- 3 इतनी _____ कर ली जो आप _____ आत्माओं के हर _____ में पढ़ है
- 4 सभी अपनी-अपनी प्राप्ति की _____ में लगे हुए हैं लेकिन _____ क्या है! सब _____ करने में लगे हुए हैं।
- 5 एक तरफ _____ आत्मायें _____ के प्राप्ति वाली हैं जिसमें प्राप्ति के साथ-साथ _____ भी है।

सही-गलत वाक्यों को चिह्नित करें:- 【✓】 【✗】

- 1 :- आज सुखमय सम्बन्ध है कल वही सम्बन्ध दुःखमय बन जाता है।
- 2 :- प्यार-प्यार में ही बाप को साथी बना लिया।
- 3 :- दुनिया वाले भक्ति करते हैं और आपने मुहब्बत से पा लिया।
- 4 :- बाबा कहा और खजानों की चाबी मिली।
- 5 :- स्व का भाव वा श्रेष्ठ भाव यही स्वभाव हो।

QUIZ ANSWERS

प्रश्न 1 :- विनाशी और अविनाशी संबंधों के बारे में बाबा ने क्या बताया?

उत्तर 1:- बाबा ने बताया है कि :-

- ① अविनाशी सम्बन्ध कभी भी दुख वा धोखा देने वाला नहीं है। विनाशी सम्बन्धों में वर्तमान समय दुख है वा धोखा है।
- ② अविनाशी सम्बन्ध में सच्चा स्नेह है। सुख है। तो सदा स्नेह और सुख के सर्व सम्बन्ध बाप से प्राप्त हैं।
- ③ जिस आत्मा को जो सम्बन्ध प्यारा है उसी सम्बन्ध से भगवान प्रीत की रीति निभा रहे हैं।
- ④ भगवान को सर्व सम्बन्धी बना लिया। ऐसा श्रेष्ठ सम्बन्ध सारे कल्प में प्राप्त नहीं हो सकता।

प्रश्न 2 :- हम बच्चों के पूजनीय रूप में पूजन होने के विषय में बाबा क्या कहते हैं?

उत्तर 2:- बाबा ने कहा :-

① आपके जड़ चित्रों के नाम से अनेक आत्मार्यें अपना काम सिद्ध कर रही हैं। नाम आप देवी-देवताओं का लेते हैं। काम अपना सिद्ध करते हैं।

② एक जन्म नाम बाला नहीं होता, सारा कल्प आपका नाम बाला है। तो सुखमय, सच्चे सम्पत्तिवान हो।

③ आपका ऐसा श्रेष्ठ सम्पर्क है जो आपके जड़ चित्रों की सेकण्ड के सम्पर्क की भी प्यासी हैं। सिर्फ दर्शन के सम्पर्क के भी कितने प्यासे हैं!

④ सारी-सारी रातें जागरण करते रहते हैं। सिर्फ सेकण्ड के दर्शन के सम्पर्क के लिए पुकारते रहते हैं।

प्रश्न 3 :- दुनिया की आत्माएं परमात्मा को प्राप्त करने से वंचित क्यों हैं?

उत्तर 3:- दुनिया की आत्माएं परमात्मा को प्राप्त करने से वंचित होती हैं क्योंकि :-

① आत्मा ही परमात्मा है वा सर्वव्यापी परमात्मा है इस भ्रान्ति के कारण खोज में ही रह गये। प्राप्ति से वंचित रह गये हैं।

② साइन्स वाले भी - अभी और आगे है और आगे है, ऐसा करते-करते चन्द्रमा में, सितारों में दुनिया बनायेंगे, खोजते-खोजते खो गये हैं।

③ शास्त्रवादी शास्त्रार्थ के चक्कर में विस्तार में खो गये हैं। शास्त्रार्थ का लक्ष्य रख अर्थ से वंचित हो गये हैं।

प्रश्न 4 :- डबल विदेशी बच्चों से बाप दादा क्या कह रहे हैं?

उत्तर 4:- डबल विदेशी बच्चों से बाप दादा कहते हैं कि :-

① बापदादा विशेष डबल विदेशी बच्चों को मुबारक देते हैं कि विश्व में अनेक आत्माओं के बीच आप श्रेष्ठ आत्माओं की पहचान का नेत्र शक्तिशाली रहा। जो पहचाना और पाया।

② अपने असली बाप को दूर होते भी समीप से पहचान लिया। समीप के सम्बन्ध में आ गये।

③ ब्राह्मण जीवन की रीति रसम को अपनी आदि रीति रसम समझ, सहज अपने जीवन में अपना लिया है।

प्रश्न 5 :- बाबा हम ब्राह्मण बच्चों को कौन सी आत्मा कह रहे हैं?

उत्तर 5:- बाबा कह रहे हैं-

① रोज बापदादा द्वारा महावाक्य सुनते-सुनते महान आत्मार्य बन गयी।

② महान ते महान कर्तव्य करने के लिए सदा निमित्त हैं।

③ हर आत्मा के प्रति मंसा से, वाचा से, सम्पर्क से महादानी आत्मा हैं

④ सदा महान युग के आह्वान करने वाले अधिकारी आत्मा हैं। यही याद रखना।

FILL IN THE BLANKS:-

(खुशी, विश्व, विशेष, संपर्क, अप्राप्ति, रिजल्ट, रोटी, अनेक, कदम, अल्पकाल, अपने, खोज, बाप, प्राप्ति, लगन)

1 आप _____ को देखो कितने सुख और _____ की, दाल _____ मिल रही है।

अपने / खुशी / रोटी

2 एक बेहद के _____ के बनने के कारण सारे _____ की आत्माओं से _____ हो गया।

बाप / विश्व / सम्पर्क

3 इतनी _____ कर ली जो आप _____ आत्माओं के हर _____ में पढ़ है

प्राप्ति / विशेष / कदम

4 सभी अपनी-अपनी प्राप्ति की _____ में लगे हुए हैं लेकिन _____ क्या है! सब _____ करने में लगे हुए हैं।

लगन / रिजल्ट / खोज

5 एक तरफ _____ आत्मायें _____ के प्राप्ति वाली हैं जिसमें प्राप्ति के साथ-साथ _____ भी है।

अनेक / अल्पकाल / अप्राप्ति

सही-गलत वाक्यों को चिह्नित करें:- **【✓】** **【✗】**

1 :- आज सुखमय सम्बन्ध है कल वही सम्बन्ध दुःखमय बन जाता है।

【✓】

2 :- प्यार-प्यार में ही बाप को साथी बना लिया। **【✗】**

प्यार-प्यार में ही बाप को अपना बना लिया।

3 :- दुनिया वाले भक्ति करते हैं और आपने मुहब्बत से पा लिया।

【✘】

दुनिया वाले मेहनत करते हैं और आपने मुहब्बत से पा लिया।

4 :- बाबा कहा और खजानों की चाबी मिली। 【✓】

5 :- स्व का भाव वा श्रेष्ठ भाव यही स्वभाव हो। 【✓】